This question paper contains 4+2 printed pages]

आपका अनुक्रमांक.....................

6163

B.A. (Hons.) बी.ए.(ऑनर्स)/III E

HINDI—Paper VIII

हिंदी—प्रश्नपत्र VIII

(हिंदी नाटक)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 38

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) हा! यह वही भूमि है जहाँ साक्षात् भगवान श्रीकृष्णचन्द्र के दूतत्व करने पर भी वीरोत्तम दुर्योधन ने कहा था, "सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव" और आज हम उसी

भूमि को देखते हैं कि श्मशान हो रही है । अरे यहाँ की योग्यता, विद्या, सभ्यता, उद्योग, उदारता, धन, बल, मान, दृढचित्तता, सत्य सब कहाँ गए ? अरे पामर जयचन्द्र ! तेरे उत्पन्न हुए बिना मेरा क्या डूबा जाता था ?

अथवा

हमारा सृष्टि-संहार कारक भगवान् तमोगुण जी से जन्म है । चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं । पर्वतों की गुहा-शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है । हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं । हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक, जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं । सुनते हैं कि भारतवर्ष में भेजने को मुझे मेरे परम पूज्य मित्र दुर्दैव महाराज ने आज बुलाया है । चलें देखें क्या कहते हैं ? 5

(ख) प्रणय, प्रेम ! जब सामने से आते हुए तीव्र आलोक की तरह आँखों में प्रकाश-पुंज उँड़ेल देता है, तब सामने की सब वस्तुएँ और भी स्पष्ट हो जाती हैं । अपनी ओर से कोई भी प्रकाश की किरण नहीं । तब वही केवल वही ! हो पागलपन, भूल हो, दुःख मिले, प्रेम करने की एक ऋतु होती है । उसमें चूकना, उसमें सोच-समझकर चलना, दोनों बराबर हैं । सुना है दोनों ही संसार के चतुरों की दृष्टि में मूर्ख बनते हैं ।

अथवा

विधान की स्याही का एक बिंदु गिरकर भाग्य-लिपि पर कालिमा चढ़ा देता है । मैं आज यह स्वीकार करने में भी संकुचित हो रहा हूँ कि ध्रुवदेवी मेरी है । हाँ, वह मेरी है, उसे मैंने आरंभ से ही अपनी संपूर्ण भावना से प्यार किया है । मेरे हृदय के गहन अंतस्तल से निकली हुई यह मूक स्वीकृति आज बोल रही है ।

मैं पुरुष हूँ ? नहीं, मैं अपनी आँखों से अपना वैभव और अधिकार दूसरों को अन्याय से छीनते देख रहा हूँ और मेरी वाग्दत्ता पत्नी मेरे ही अनुत्साह से आज मेरी नहीं रही । नहीं, यह शील का कपट, मोह और प्रवंचना हैं । मैं जो हूँ, वही तो नहीं स्पष्ट रूप से प्रकट कर सका । यह कैसी विडंबना है । 5

(ग) अब तुम समझो एक फनकार है, तस्वीरें बनाता हैं । उसके दिल में एक जज्बा उठता है । अब जज्बे का अपना तो कोई रंगरूप नहीं होता, कोई शक्ल नहीं होती, लेकिन वह फनकार रंगों लकीरों की मदद से उस जज्बे को बयान कर देता है । मतलब कि तस्वीर देखनेवाला उन रंगों और लकीरों को देखते हुए उस जज्बे को पा जाता हैं जिसे फनकार बयान करना चाहता है । समझे ? इसी तरह पत्थर का बुत अपने में खुदा नहीं है, लेकिन उसके जरिये हम उस खुदा का तसव्वुर कर लेते हैं । ऐसा इन

लोगों का कहना है । पर हमें तो, सच पूछो, इन बातों के बारे में सोचकर ही सिर-दर्द होने लगता है ।

अथवा

लज्जा ! उस पापी को लज्जा!! भीमसेन! ऐसी अनहोनी बात की तुमने कल्पना भी कैसे की । जो अपने सगे-संबंधियों को गाजर मूली की तरह कटवा सकता है, जो अपने भाईयों को जीवित जलवा देने में भी नहीं हिचकिचाता, जो अपनी भाभी को भरी सभा में अपमानित कराने में आनंद ले सकता है, उसका लज्जा से क्या परिचय ! 5

2. ''भारत-दुर्दशा' में साम्राज्यवाद के विरुद्ध पहली बार साहित्य में राजनीतिक चेतना उभरती दिखाई देती है ।'' इस कथन की विवेचना कीजिए ।

अथवा

" 'भारत-दुर्दशा' के पात्र अमूर्त होते हुए भी मूर्त प्रतीत होते हैं ।" इस कथन की समीक्षा कीजिए । 8

3. 'ध्रुवस्वामिनी' में व्यक्त स्त्री-पुरुष संबंधों की विडंबना का विश्लेषण कीजिए ।

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का नायक कौन है और क्यों ? युक्तियुक्त उत्तर दीजिए । 8

4. 'कबिरा खड़ा बजार में' नाटक के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए ।

अथवा

'दीपदान' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए । 7